श्री घनश्याम मेठी: एक विलक्षण व्यक्तित्व के धनी

दौसा जिला राजस्थान के प्रसिद्ध समाजसेवी घनश्याम मेठी मूलत: अलवर जिले के रहने वाले है, इनका जन्म अलवर जिले के ग्राम गोवर्धनपुरा तहसील राजगढ में 24 सितम्बर 1947 को हुआ। इनकी माता का नाम कस्तूरी देवी एवं पिता का नाम रामकिशोर मेठी था। इन्होने खण्डेलवाल वैश्य कुल में मेठी परिवार में जन्म लिया। इनका विवाह दौसा में माचीवाल परिवार के श्रीमती प्रेमदेवी से हुआ। इनके दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है।

बचपन में ही पढने में होशियार एवं प्रतिभा के धनी थे। अलवर राजरिसी कॉलेज से सन 1967 में बीकॉम किया। कालेज में चार साल तक छात्र राजनीति की व विभिन्न पदो पर रहे। हिन्दी साहित्य में राजस्थान यूनिवर्सिटी से हिन्दी साहित्य के लिए अलग से प्रशस्वी पत्र प्राप्त किया। अलवर में 18 साल रहकर कई सामाजिक गतिविधियों से जुडे रहे। ग्राम गोवर्धनपुरा (टहला) में नवयुवक मण्डल चलाकर बिजली, सडक एवं डाकघर खुलवाये। सहकारी क्रय विक्रय समिति के अध्यक्ष एवं दुग्ध डेयरी के अध्यक्ष रहे। सन 1983 में दौसा में दौसा आ गये। दौसा में आकर मोटर पार्टस एवं प्लाईवुड का व्यापार किया। दौसा में बढ-चढकर सामाजिक संस्थाओं में भाग लिया। दौसा गुप्तेश्वर मन्दिर ट्रस्ट एवं लॉयन्स क्लब एवं जिला कबड्डी संघ एवं गायत्री परिवार के जिलाध्यक्ष रहे। भारत स्काउट गाइड के उपप्रधान एवं आजीवन सदस्य है। संत सुन्दरदास खण्डेलवाल वैश्य महासमिति के कार्य समिति के सदस्य एवं आजीवन सदस्य है। दौसा वैश्य महासम्मेलन के 7 साल शहर अध्यक्ष रहे। वर्तमान में राजस्थान वैश्य महासम्मेन के प्रदेश संगठन मंत्री एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य एवं सरक्षक, सदस्य है और कई सामाजिक एवं सेवाभावी संस्थाओं से जुडे हुए है।

स्वभाव से हंसमुख सहयोगीवृत्ति एवं समाज सेवा में रूचि रखते है। इनको लेखन एवं साहित्य में भी निपुणता हासिल है, देश की विभिन्न राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर की सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित होते रहे है। समाज सेवा एवं लेखन कार्य को ईश्वर की सेवा मानते है, सहनशील एवं विनम्र स्वभाव के धनी है। ये दो बार राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ सामाजिक लेखन के माध्यम से सम्मानित हो चुके है।